किरण कौशल (3रा स्थान), IAS-2008

2 (R)

> 120-145
V. good

दृष्टि
The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) ....

उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

नाम (Name) KIRAN KAUSHAL BANSAL विषय (Subject) ESSAY तिथि (Date) 14/09/2008

पता (Address) .... फोन नंबर (मोबाइल) .... DC

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

vi) नई वैश्विक व्यवस्था मे भारत का उभरता स्थान

20 वी सदी उथल पुथल की सदी रही है जिसने दो विश्वयुद्धो सहित अनेक भूचालो को अपने भीतर समेटा है तथा अनेक आश्चर्यजनक और अकल्पित परिवर्तनो को महसूस किया है। इक्कीसवी सदी की भोर मे सूचनाक्रांति और भूमण्डलीकरण के रथ पर बैठी आज की दुनिया और भी तेज परिवर्तनो के लिये काल के गाल पर अपना नाम अंकित करेगी। आज विश्व का प्रत्येक क्षेत्र परिवर्तन से अछूता नही रह गया है। विगत शताब्दियो मे जो लोग, जो क्षेत्र और जो देश वैश्विक महत्व नही रखते थे, उनका वज़न यकायक बढ़ने लगा है। पूर्व आज पश्चिम के दंभ को तोड़ने को आमादा है, आत्मविश्वास से लबालब है; तो वही पश्चिम की बौखलाहट साफ दिखाई देती है। ये संकेत है - वैश्विक व्यवस्था मे हो रहे परिवर्तन के। ये संकेत अनेक प्रश्नो को जन्म देते है - वैश्विक व्यवस्था मे

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

किस प्रकार के बदलाव हो रहे हैं ? व्यवस्था क्यों बदल रही है ? बदली व्यवस्था में वेदों और सनातन संस्कृति की भूमि 'भारत' की स्थिति कहाँ होगी ? क्या हमारी आगामी पीढ़ियाँ गौरवशाली उभार की प्रत्यक्षदर्शी बनेंगी ? यदि हाँ, तो इस उभार की दिशा और दशा क्या होगी ? इसके लिये किस प्रकार के प्रयास अवश्यम्भावी होंगे ? उभार की कीमत चुकाएगा कौन ?

नई वैश्विक व्यवस्था में भारत के उभार का सही चित्र उकेरने के लिये इन प्रश्नों पर विचारमंथन करना आवश्यक प्रतीत होता है।

आज का विश्व उत्तर-शीतयुद्ध का विश्व है जिसमें एक ध्रुवीयता प्रभावी दिखाई देती है किंतु इसके नेपथ्य में बहु-ध्रुवीयता का चरण भी आरंभ हो चुका है। आज अमेरिका के समक्ष भारत, चीन, यूरोपीयन यूनियन जैसी नई शक्तियाँ लामबन्द हो रही हैं। सूचना प्रौद्योगिकी एवं मीडिया क्रांति के साथ आज हर क्षेत्रीय उथल पुथल का प्रभाव वैश्विक हुआ है। जहाँ आज 'लोकतंत्र' की सर्वोत्तम शासन व्यवस्था के रूप में स्वीकार्यता बढ़ी है वहीं मयन्मार जैसे कई देश ~~प्रजातंत्र~~ सैन्य तानाशाही का शिकार है। आज आर्थिक पक्ष का महत्व बढ़ा है, पर सभी ने समझ लिया है कि

दृष्टि The Vision
दृष्टि The Vision
दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

> नई वैश्विक व्यवस्था में हर देश की ताकत उसकी आर्थिक मजबूती ही तय करेगी। यही कारण है कि सीमा विवाद कम हुये हैं तथा ऐतिहासिक शत्रुता का स्थान आर्थिक लाभकारी संबंधो ने लेना प्रारंभ कर दिया है। पूंजीवाद के विस्तार से मुक्त बाजारवाद बढ़ा है और विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थाओ की सक्रियता बढ़ी है। उदारीकरण और वैश्वीकरण ने आर्थिक गतिशीलता के साथ साथ सांस्कृतिक व आर्थिक साम्राज्यवाद का सह-उत्पाद भी दिया है। यही कारण है कि 'दक्षिण' आज अधिक लामबन्द नज़र आता है। साथ ही, नाफ्टा, मर्कोसुर जैसे क्षेत्रीय संगठनो का महत्व बढ़ा है।

आज की वैश्विक व्यवस्था इस्लामी आतंकवाद, ग्लोबल वार्मिंग जैसे खतरों के समक्ष असहाय नज़र आती है एवं नाभिकीय तकनीक के दुरुपयोग के दुःस्वप्न से भयभीत है। इन्हीं चुनौतियों से लड़ने का दावा करते हुए अमेरिका 'आतंक के विरुद्ध युद्ध' तथा 'लोकतंत्र के प्रसार' के नाम पर दुनिया को आतंकित कर रहा है।

आज की व्यवस्था उत्तर आधुनिक है जिसमे उपभोक्ता केन्द्रवाद प्रभावी है। ऊर्जा स्रोतों पे कब्जे की दौड़ बढ़ी है वही वैकल्पिक स्रोत भी खोजे जा रहे हैं।

एक सर्वे के अनुसार इक्कीसवीं सदी एशिया की सदी होगी जिसमें यूरोप व मध्य एशिया की तुलना

दृष्टि The Vision
पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष - 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail): drishti thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

मे दक्षिणी व पूर्वी एशिया तथा हिन्द महासागर का क्षेत्र सबसे प्रभावी रहेगा।

एशिया के इस उत्थान को भारत से अलग करके नहीं समझा जा सकता है। विश्व व्यापार संगठन एवं विश्व बैंक की रिपोर्टों के अनुसार 2045 तक चीन और भारत विश्व की प्रमुख शक्तियो मे शुमार हो जाएंगे। आज भारत विश्व मे अपनी स्वतंत्र और मूल्य परक विदेश-नीति के लिये जाना जा रहा है जिस पर दलगत स्वार्थ कभी हावी नहीं रहे। भारत ने एक जिम्मेदार पड़ोसी एवं विश्वसनीय साथी के रूप मे अपनी साख बनाई है जिसकी कथनी और करनी मे कोई अंतर नहीं रहा है। यही कारण है कि आज भारत बहुध्रुवीय विश्व मे "दक्षिण" के ताकतवर नेतृत्वकर्ता के रूप मे उभरा है तथा ब्राजील, दक्षिण-अफ्रीका जैसे विकासशील देशों के साथ मिलकर हर वैश्विक मंच पर "दक्षिण" के हितो को बुलंद आवाज के साथ रख रहा है; चाहे वह डब्ल्यू. टी. ओ. मे कृषि सब्सिडी की कटौती का मुद्दा हो या फिर सुरक्षा-परिषद मे सुधार का; गलत अमेरिकी नीतियो के विरोध का मुद्दा हो या अफ्रीकी देशों को समर्थन देने का।

आज भारत विश्व की 16.7% जनसंख्या व जिम्मेदार राष्ट्र के नाते सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्राप्त करने के अपनी मानकों को पूर्ण कर रहा है। भारत में सुरक्षा परिषद् की सदस्यता मिलनी निश्चित है, प्रश्न केवल समय का है।

भारत की इस वैश्विक साख की बुनियाद उसके सबसे बड़े प्रजातंत्र होने में निहित मानी जा सकती है। जहाँ भारत के निकट पड़ोसी राजनीतिक अस्थिरता के चक्र में उलझे हुये हैं वहीं भारत में प्रति पाँच वर्षों में आम चुनावोपरांत शांतिपूर्ण सत्ता परिवर्तन सामान्य बात है। इतना ही नहीं, हमने पंचायती राज को संवैधानिक दर्जा देकर प्रजातंत्र को हर ग्रामीण द्वार तक पहुँचा दिया है। भारतीय जन मानस की रगों में रचे-बसे लोकतांत्रिक मूल्य भारत के साथ जन्मे नवस्वाधीन देशों में विरले ही दिखाई पड़ते हैं।

आज भारत ब्रह्मोस, अग्नि-3, जैसे हथियारों के साथ एशिया की प्रमुख सामरिक शक्ति के रूप में उभरा है किंतु इसके बावजूद भी भारत ने शांतिपूर्ण परमाणु नीति अपनाई है एवं विश्व को "प्रथम प्रयोग नहीं" का आश्वासन दिया है। यही कारण है कि भारत को "परमाणु सम्पन्न देश" का दर्जा ना होते हुये भी "एक जिम्मेदार परमाणु राष्ट्र" के रूप में स्वीकारा गया है। अमेरिका के साथ प्रस्तावित नाभिकीय समझौता इस वैश्विक स्वीकृति का ज्वलन्त प्रमाण है।

पाकिस्तान एवं चीन जैसे परम्परागत शत्रुओं ने

दृष्टि The Vision
दृष्टि The Vision
दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128 0-9313988616 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भी भारत की बढ़ती शक्ति को स्वीकार कर लिया है तथा भारत के साथ बहुपक्षीय आदान - प्रदान को आतुर है।

वैश्विक ऊर्जा राजनीति मे भारत "एशियाई - एनर्जी ग्रिड" के निर्माण की सम्भावना को मूर्तता प्रदान करने मे अनिवार्य भूमिका रखता है। भारत जी - आर स्टील टर संगठन मे शामिल हो रहा है

नई व्यवस्था मे भारत का आर्थिक उभार भी हो रहा है। भारत की संवृद्धि दर दहाई अंकों की ओर अग्रसर है, सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे उभरती ताकत है, विश्व के प्रमुखतम बाजारो मे शामिल हो चुका है। आज के उपभोक्ता केन्द्रवादी आर्थिक व्यवस्था मे भारतीय बाजार को नजरअंदाज करने का साहस अमेरिका सहित किसी भी देश मे नहीं है।

आज भारत अपने सूचना शिक्षा प्राप्त कुशल मानव संसाधन पर भी गौरवान्वित है। भारत के आई. आई.टी. व आई. आई. एम. वैश्विक साख रखने लगे है। आज भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र मे व्यवसायिक उपग्रह प्रक्षेपण का शंखनाद कर चुका है, इसने स्वदेशी क्रायोजेनिक इंजन भी विकसित कर लिए है। चाहे एड्स के टीके के विकास की बात हो या स्टेम सेल अनुसंधान की; भारत की तकनीकी चेतना किसी परिचय की मोहताज नहीं रह गई है।

दृष्टि The Vision
दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष :-011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यही कारण है कि भारत को नाभिकीय संलयन पर आधारित वैश्विक आई.टी.ई.आर. प्रोजेक्ट में भागीदारी का अवसर मिला है।

भारत का उभार केवल भौतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। वरन् आज के मूल्य विहीनता से भरे विश्व के समक्ष भारतीय संस्कृति की नैतिकता एवं आध्यात्म बड़ी मजबूती से खड़े नजर आते हैं। विवेकानंद ने कहा था कि "भारत का वायुमण्डल आध्यात्मिकता की तरंगो से ओत-प्रोत है।" महर्षि महेश योगी जैसे आध्यात्मिक गुरूओं ने इस तथ्य को वैश्विक स्वीकृति दिलाई है। भूमंडलीय तापन जैसे खतरों से जूझते विश्व के सामने भारत अपने "वसुधैव कुटुम्बकम्" के मूल्यों की प्रासंगिकता सिद्ध करता प्रतीत होता है। विश्व विख्यात पर्यावरणवादी अर्नेस ने भी कहा था कि - "इस दुनिया को केवल एक ही रास्ता बचा सकता है और वह है - गांधी का रास्ता।"

किंतु, इससे पहले कि हम आत्ममुग्ध हो उठें, सिक्के के दूसरे पहलू को भी परखना जरूरी है। वैश्विक शक्ति बनने की ओर अग्रसर भारत आज भी गांधी जी के अन्त्योदय तथा सर्वोदय से कोसों दूर खड़ा है। हम भी वैश्विक डिजिटल डिवाइड से अछूते नहीं हैं। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी की सुरसा मुँह बाये खड़ी है तो क्षेत्रीय और आर्थिक विषमताएँ

हमारी तथाकथित समृद्धि का उपहास करती प्रतीत होती हैं। हमारे जनमानस का एक बहुत बड़ा हिस्सा आज भी अपने अस्तित्व के लिये संघर्षरत है तथा भारत के वैश्विक उभार से अनभिज्ञ है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली दोषमुक्त नहीं हो गई है तथा मानव-विकास-सूचकांक भारत की आर्थिक समृद्धि से मेल खाता प्रतीत नहीं होता है। हम कई बार तमाशे के रूप में भी विश्व के समक्ष खड़े हुए हैं - चाहे वह संसद में गरिमाहीनता का मामला हो या गुजरात के साम्प्रदायिक दंगों का। ये सभी तथ्य हमारे वैश्विक उभार पर प्रश्नचिन्ह लगाकर (श्री शिवखेड़ा) के एक कथन की ओर हमारा ध्यान बरबस ही आकृष्ट करते हैं - "चूहों की दौड़ की सबसे महत्वपूर्ण बात यह होती है कि जीतने वाला भी चूहा ही होता है।"

कहीं हम चूहों की भांति अंधी दौड़ में शामिल तो नहीं हो गये हैं? ये प्रश्न अहम् हैं। भारत की दौड़ में अंतिम भारतीय भी सहभागी बनें, यह सुनिश्चित करना होगा। कुछ कमियां निश्चित रूप से हैं, बहुत कुछ किया जाना बाकी है। किंतु इसके साथ ही, यह सत्य भी अटल है कि विगत अर्द्ध-शताब्दी की स्वाधीनता में हमने बहुत कुछ कर दिखाया

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है, पूरी दुनिया आज भारत का लोहा मानने को तैयार है। ~~परिव~~ समकालीन विश्व के साथ चलना समय की आवश्यकता है इस ~~तथ्य~~ अटल सत्य को भारत ने स्वीकारा है। जिस तेजी से साथ दुनिया बदल रही है, इसके साथ-साथ चलने को भारत तैयार है तथा बदलती दुनिया भी भारत के बढ़ते महत्व को स्वीकार करने को आतुर है। भारत का वैश्विक उभार आज का यथार्थ है, यह भारत के लिये संभव भी है और वांछनीय भी। बस, साथ में यह सावधानी रखनी जरूरी होगी कि हम हर आने वाले खतरे के लिये तैय्यार रहें, उभरे भारत की तस्वीर केवल गिने चुने शहरो तक सीमित ना रहे, भारत का हर गाँव उसे देखकर आह्लादित हो सके। यद्यपि नई विश्व व्यवस्था मे भारत का उभार निर्विवाद है, बस हम इस तरह ना उभरें कि अपनी जड़ो से कट जाएँ। यदि हम इस अग्निपरीक्षा मे सोने की तरह तपकर निकले तो भारत का हर नागरिक गर्व से कह सकेगा —

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा।
हम बुलबुले हैं इसके।
ये गुलिस्तान हमारा।।"

कुछ, यदि गौर्लों बनाए रखें। V. good 130-145